Hindi 2018-19

Peer Reviewed Referred and UGC
Listed Journal (Journal No. 40776)

ISSN 2277 - 5730

AN INTERNATIONAL
MULTIDISCIPLINARY QUARTERLY
RESEARCH JOURNAL

AJANTA

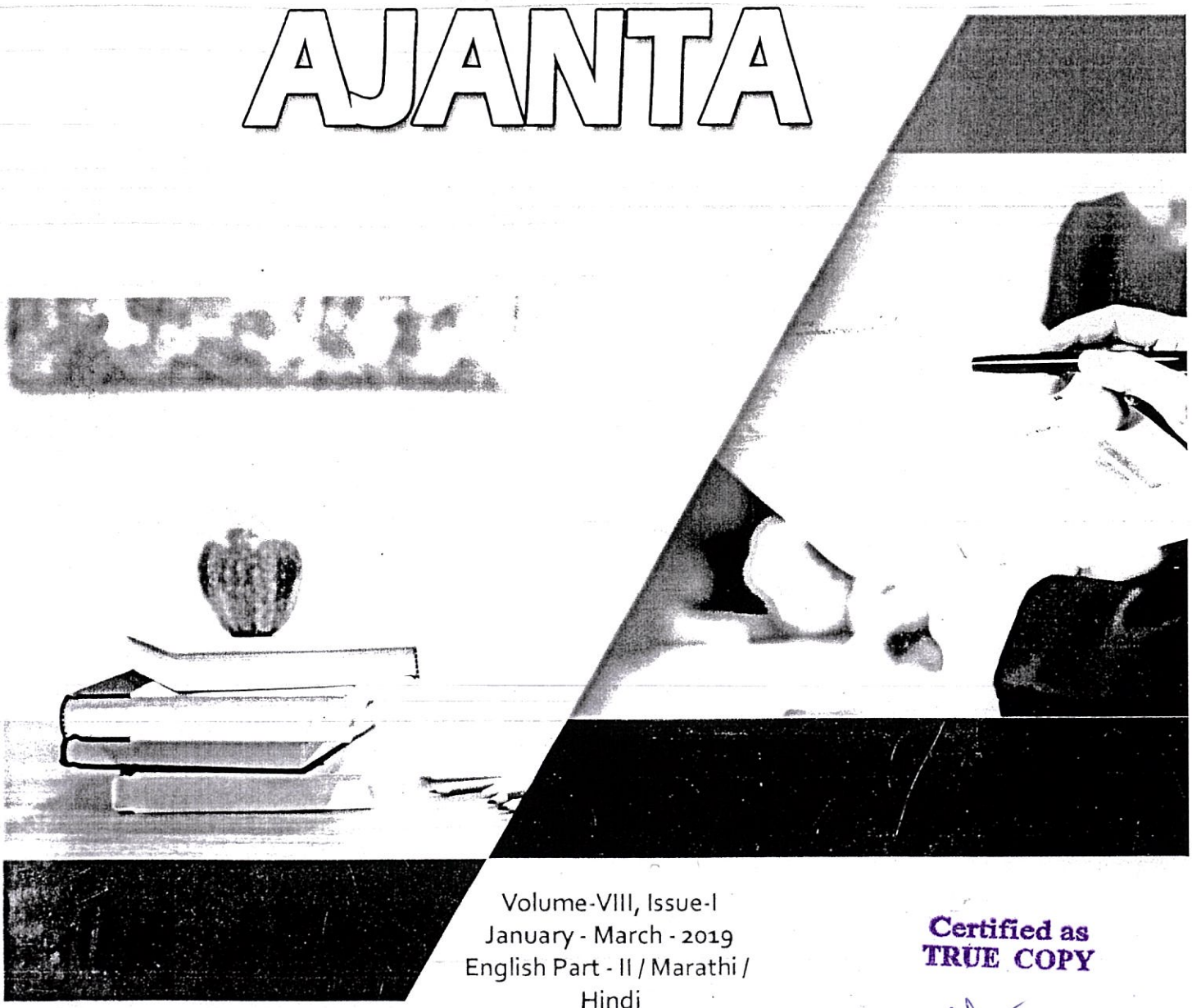

Volume-VIII, Issue-I
January - March - 2019
English Part - II / Marathi /
Hindi

IMPACT FACTOR / INDEXING
2018 - 5.5
www.sjifactor.com

Certified as
TRUE COPY

Principal
Ramniranjan Jhunjhunwala College,
Ghatkopar (W), Mumbai-400086

Ajanta Prakashan

18-19

ISSN 2277 - 5730

AN INTERNATIONAL MULTIDISCIPLINARY
QUARTERLY RESEARCH JOURNAL

AJANTA

Volume - VIII Issue - I January - March - 2019

English Part - II / Marathi / Hindi

Peer Reviewed Refereed and UGC Listed Journal

Journal No. 40776

ज्ञान-विज्ञान विमुक्तये

IMPACT FACTOR / INDEXING

2018 - 5.5

www.sjifactor.com

❖ EDITOR ❖

Asst. Prof. Vinay Shankarrao Hatole

M.Sc (Maths), M.B.A. (Mktg.), M.B.A. (H.R.),
M.Drama (Acting), M.Drama (Prod. & Dir.), M.Ed.

❖ PUBLISHED BY ❖

Ajanta Prakashan

Aurangabad. (M.S.)

Certified as
TRUE COPY

Principal
Ramniranjan Jhunjhunwala College,
Ghatkopar (W), Mumbai-400086.

EDITORIAL BOARD

Professor Kaiser Haq
Dept. of English, University of Dhaka,
Dhaka 1000, Bangladesh.

Roderick McCulloch
University of the Sunshine Coast,
Locked Bag 4, Maroochydore DC,
Queensland, 4558 Australia.

Dr. Ashaf Fetoh Eata
College of Art's and Science
Salmau Bin Adbul Aziz University. KAS

Dr. Nicholas Loannides
Senior Lecturer & Cisco Networking Academy Instructor,
Faculty of Computing, North Campus,
London Metropolitan University, 166-220 Holloway Road,
London, N7 8DB, UK.

Muhammad Mezbah-ul-Islam
Ph.D. (NEHU, India) Assot. Prof. Dept. of
Information Science and Library Management
University of Dhaka, Dhaka - 1000, Bangladesh.

Dr. Meenu Maheshwari
Assit. Prof. & Former Head Dept.
of Commerce & Management
University of Kota, Kota.

Dr. S. Sampath
Prof. of Statistics University of Madras
Chennari 600005.

Dr. D. H. Malini Srinivasa Rao
M.B.A., Ph.D., FDP (IIMA)
Assit. Prof. Dept. of Management
Pondicherry University
Karaikal - 609605.

Dr. S. K. Omanwar
Professor and Head, Physics,
Sat Gadge Baba Amravati
University, Amravati.

Dr. Rana Pratap Singh
Professor & Dean, School for Environmental
Sciences, Dr. Babasaheb Bhimrao Ambedkar
University Raebareily Road, Lucknow.

Dr. Shekhar Gungurwar
Hindi Dept. Vasantrao Naik
Mahavidyalaya Vasarni, Nanded.

Memon Sohel Md Yusuf
Dept. of Commerece, Nirzwa College
of Technology, Nizwa Oman.

Dr. S. Karunanidhi
Professor & Head,
Dept. of Psychology,
University of Madras.

Prof. Joyanta Borbora
Head Dept. of Sociology,
University, Dibrugarh.

Dr. Walmik Sarwade
HOD Dept. of Commerce
Dr. Babasaheb Ambedkar Marathwada
University, Aurangabad.

Dr. Manoj Dixit
Professor and Head,
Department of Public Administration Director,
Institute of Tourism Studies,
Lucknow University, Lucknow.

Prof. P. T. Srinivasan
Professor and Head,
Dept. of Management Studies,
University of Madras, Chennai.

Dr. P. Vitthal
School of Language and Literature
Marathi Dept. Swami Ramanand
Teerth Marathwada University, Nanded.

Certified as
TRUE COPY

Principal
Ramniranjan Jhunjhunwala College,
Ghatkopar (W), Mumbai-400086.

CONTENTS OF ENGLISH PART - II

S. No.	Title & Author	Page No.
1	Changing Nature of Freedom of Expression and Speech with the Advent of Social Media **Dr. Swati Mohite**	1-9
2	# Me too Movement **Ms. Kruti Momaya** **Ms. Pooja Savla**	10-15
3	Social Media Application for Entrepreneurs Benefits **Ms. Neha Shaikh**	16-23
4	Eat, Exercise, Post, Repeat"- CAN I? **Ms. Shagufta Memon** **Ms. Sana Khan**	24-32
5	Mobile Media: Usage Patterns of Young Children at Home and its Impact on their Socialization Skills **Dr. Sarita Kasaralkar**	33-39
6	Impact of Mass Media on Society **Asst. Prof. Hiralal Kashirao Bhosale**	40-45
7	An Analytical Study of Trade Related Intellectual Property Rights in Pharmaceutical Patent in India **Dr. Daksha Dave**	46-53
8	Social Media in Relation with Emotional Intelligence **Mrs. Varsha Palkar**	54-61
9	Freedom of Expression on Social Media Platforms- A Speculation or an Assumption? A Millennial's Perspective **Ms. Sonal Mane**	62-69
10	Use of English as Lingua Franca on Social Media in India **Dr. Nimisha Nitin Kambli**	70-74

Certified as
TRUE COPY

Principal
Ramniranjan Jhunjhunwala College,
Ghatkopar (W), Mumbai-400086.

CONTENTS OF MARATHI

अ.क्र.	लेख आणि लेखकाचे नाव	पृष्ठ क्र.
१	प्रसारमाध्यम आणि स्त्री सह. प्रा. किरण जाधव	१-४
२	प्रसार माध्यमांची नैतिकता आणि समाज श्री. प्रशांत आर. कांबळे	५-१०
३	सोशल मीडियाची प्रभावशाली वाटचाल सह. प्रा. रश्मी शेट्ये-तुपे	११-१५
४	प्रसार माध्यमांची नीतिमत्ता : एक दृष्टिक्षेप डॉ. रेखा प्रशांत शेलार	१६-२०
५	पपराजी सह. प्रा. वसंत पानसरे	२१-२३

CONTENTS OF HINDI

अ.क्र.	लेख आणि लेखकाचे नाव	पृष्ठ क्र.
१	न्यू मीडिया और हिन्दी साहित्य डॉ. उषा मिश्रा	१-५
२	अभिव्यक्ति और संवाद की स्वतंत्रता पर सोशल मीडिया का प्रभाव और 'लैंगिक समानता' डॉ. मिथुन खेरडे	६-१३
३	लिंग समानता : एक दृष्टि डॉ. मिथिलेश शर्मा	१४-१८
४	बाज़ार और विज्ञापन डॉ. प्रवीण चंद्र बिष्ट	१९-२२
५	पापारात्सी डॉ. किरण सिंह	२३-२४
६	उपभोक्ता व्यवहार व सोशल मीडिया सह. प्रा. दिनेश पाठक	२५-२८

Certified as
TRUE COPY

Principal
Ramniranjan Jhunjhunwala College,
Ghatkopar (W)

३. लिंग समानता : एक दृष्टि

डॉ. मिथिलेश शर्मा
हिंदी विभागाध्यक्षा, आर. जे. कॉलेज, घाटकोपर.

२१ वीं सदी में जहाँ मानवता, समानता और अधिकार की बड़ी-बड़ी बातें होती हैं वहीं मनुष्य होने पर गर्व महसूस किया जाता है । पर, मनुष्यों में पुरुष अकेला नहीं है स्त्री और तृतीय लिंग भी इसी श्रेणी में हैं। कथनी और करनी में अंतर करने वाला पुरुष यह भूल जाता है कि स्त्री और तृतीय लिंग भी मानव की श्रेणी से अलग नहीं हैं। फिर बेटा होने पर जश्न, बेटी होने पर मायूसी तथा तृतीय लिंग के जन्म पर मातम क्यों? सर्वप्रथम हमें लिंग क्या है, यह जानने की आवश्यकता है इसके उपरांत समानता और असमानता पर बात की जा सकती है।

"'लिंग' सामाजिक-सांस्कृतिक शब्द है, सामाजिक परिभाषा से संबंधित करते हुए समाज में 'पुरुषों' और 'महिलाओं' के कार्यों और व्यवहारों को परिभाषित करता है, जबकि 'सेक्स' शब्द 'आदमी' और औरत को परिभाषित करता है जो एक जैविक और शारीरिक घटना है। अपने सामाजिक, ऐतिहासिक और सांस्कृतिक पहलुओं में, लिंग पुरुष और महिलाओं के बीच शक्ति के कार्य के संबंध हैं जहाँ पुरुष को महिला से श्रेष्ठ माना जाता है। इस तरह, 'लिंग' को मानव निर्मित सिद्धांत समझना चाहिए, जबकि 'सेक्स' मानव की प्राकृतिक या जैविक विशेषता है।" (हिन्दीकीदुनिया.कॉम)

भारतीय समाज और धर्म में स्त्रियों को जो सम्मान और आदर प्राप्त है, शायद ही वह किसी समाज और धर्म में होगा । वेदों में कहा भी गया है कि - "यत्र नार्यास्तु पूजयन्ते रमन्ते तत्र देवता।" भारतीय समाज में नारी - शक्ति, शील, देवी, लक्ष्मी, सरस्वती, वाणी आदि का प्रतीक मानी जाती है । हमारे प्राचीन ग्रंथों में स्त्रियों के प्रति सम्मानजनक नजरिया दृष्टव्य है । मनुस्मृति में भी कहा गया है कि-

"उपाध्यायात दशचार्यः आचार्याणा शतं पिता ।

सहस्त्रन्तु पितृणम् माता गौरवणति स्त्रियते ।।" (कल्याण, हिन्दू कौन, कल्याण हिन्दू संस्कृति अंक, पृष्ठ ९९)

अर्थात् दश उपाध्यायों से एक आचार्य बड़ा है, सौ आचार्य से पिता बड़ा है और पिता से माता गौरव में हजारों गुनी श्रेष्ठ है। इस प्रकार मनु ने भी स्त्रियों के सम्मान की बात कही है।

Certified as
TRUE COPY

Principal
Ramniranjan Jhunjhunwala College,
Ghatkopar (W), Mumbai-400086.

प्राचीन समय में स्त्रियों को भी पुरुषों की भाँति धार्मिक समानता प्राप्त थी ऋग्वेदकाल में स्त्रियों के उपनयन संस्कार भी हुआ करते थे। एक ओर जहाँ वैदिक साहित्य में विवाह के बाद पुत्र प्राप्ति की कामना का उल्लेख मिलता है वहीं 'वृहदारण्यक उपनिषद' में विदुषी पुत्री की कामना का भी उल्लेख है। जिससे यह स्पष्ट होता है कि प्राचीन समय में पुत्र और पुत्री दोनों का महत्व था।

हम अपने प्राचीन ग्रंथों और साहित्य का अध्ययन करते हैं तो स्त्री और पुरुष के बीच अनेकों समानता पाते हैं। जहाँ समानता हो वहाँ असमानता का प्रश्न ही नहीं उठता, किन्तु कालान्तर में स्त्रियों से वह सभी अधिकार छीन लिए गए और पुरुष समाज का मुखिया बन बैठा। अब यहाँ से शुरू होती है - स्त्री के संघर्ष की कहानी। कदम-कदम पर प्रताड़ना, प्रतिबंध आदि पुरुष द्वारा लगाए गए। संभवतः इसी कारण लिंग असमानता का दौर शुरू हुआ जो आज भी निरंतर जारी है। प्रश्न यह है कि अचानक ऐसी कौन-सी घटनाएँ घटी जो स्त्री अस्तित्वहीन हो गई? देवी से भोग्या, शक्ति से अबला, सरस्वती से अल्पबुद्धि तथा लक्ष्मी से पराधीन कैसे बन गई? कुल मिलाकर औरत, स्त्री से नारी कैसे बन गई? स्त्री के कंचन से कंचनी बनने तक के सफर में ही लिंग समानता जैसे प्रश्नों का उत्तर निहित है। जिसकी शुरुआत वेदोत्तर काल में ब्राहमण ग्रंथों से होती है, उसे समाज ने क्या बना दिया? यह सोचकर मन थरथरा जाता है।

स्त्री की अधोगति का कारण घर-परिवार समाज में, अलंकार के रुप में पहनाई गई इज्जत है। स्त्री को इज्जत रूपी गहना पहनाकर घर की सबसे अँधेरी कोठरी अर्थात् चूल्हे में बिठा दिया गया, घर की इज्जत का हवाला देकर उसे पुरुष की इज्जत से जोड़ दिया गया। इसी इज्जत को बचाने की जद्दोजहद में पुरुष ने स्त्री को वस्तु बनाकर रख दिया। अपनी इज्जत को बचाकर रखने की कोशिश में ही स्त्री को दबाकर रखा जाने लगा।

धीरे-धीरे स्त्री की स्थिति इतनी दयनीय हो गई कि महान संतों और विचारकों को जन्म देने वाली माँ के लिए कबीर कहते हैं कि - "नारी की झांई पड़त अंधा होत भुजंग" यह पंक्ति स्त्री के प्रति हीनदृष्टी का ही परिणाम था। साहित्यिक दृष्टि से मध्यकाल में सबसे अधिक स्त्री असमानता लक्षित होती है। समाज में मनोरंजन हेतु वेश्याओं और गणिकाओं को रखने की परम्परा विद्यमान थी, एक गण में एक गणिका को 'नगरवधु' की उपाधि प्रदान की जाती थी। केवल उच्चवर्ग की महिलाओं को ही शिक्षा का अधिकार प्राप्त था। इसी असमानता को देखकर कबीर, तुलसी जैसे महान कवि जहाँ एक तरफ - "पतिव्रता के रुप पर वारौं कोटि सरूप" कहकर वंदना करते हैं। वहीं तुलसीदास जी कहते हैं -

Certified as
TRUE COPY

Principal
Ramniranjan Jhunjhunwala College,
Ghatkopar (W) Mumbai-400086.

"कत विधि सृजी नारि जग माहि?

पराधीन सपनेहूँ सुख नाहिं" (तुलसीकृत रामायण - बालकाण्ड पृ. ९६)

स्त्री जन्म से ही अपने पिता, भाई तथा पति और आगे चलकर पुत्र के अधीन होती है। जीवन के हर चरण में एक पुरुष उसे नियंत्रित करता है, और यहाँ से शुरू होती है लिंग की राजनीति! समाज में उपस्थित लिंगों में से जब एक लिंग को सर्वश्रेष्ठ तथा दूसरे और तीसरे को गिरा हुआ मानकर सारे अधिकारों से वंचित कर दिया जाए तो उस लिंग की अपनी अस्मिता तथा परिवेश समय के साथ वैसा ही बनता जाता है जैसा समाज उसे देता है, ऐसे में लिंग की असमानता तथा लिंग पर राजनीति होना स्वाभाविक है। यही लिंग समानता का प्रश्न, उत्तरआधुनिक भारत में और भी विकराल स्वरूप में हमारे समक्ष खड़ा है।

भारतीय समाज में लिंग असमानता का मूल कारण इसकी पितृसतात्मक व्यवस्था में निहित है। प्रसिद्ध समाजशास्त्री सिल्विया वाल्वे के अनुसार, "पितृसतात्मकता सामाजिक संरचना की ऐसी प्रक्रिया और व्यवस्था है, जिसमें आदमी औरत पर अपना प्रभुत्व जमाता है, उसका दमन करता है और उसका शोषण करता है।"(हिन्दीकीदुनिया.कॉम) स्त्री का शोषण इतना अधिक होता है कि जन्म से ही बालिका के जेहन में पुरुष सत्ता का वर्चस्व इस हद तक घर कर जाता है कि जब वह स्वयं माँ बनती है तो अपने ही कोख से जन्मी संतानों में भेदभाव करती है। पुत्र को अधिक और पुत्री को कम प्रेम देनेवाली माँ क्या यह भूल गई कि वह एक माँ है? सिमोन द बुआ कहती हैं कि स्त्री पैदा नहीं होती बल्कि जन्म लेने के बाद समाज में बनाई जाती है। यह एक दिन की सोच का परिणाम नहीं है बल्कि सदियों से उसकी सोच में पुरुषवादी तत्वों को भरकर उसे ऐसा बना दिया गया है कि 'लड़की पराया धन है' उसकी परवरिश में ज्यादा खर्च करके क्या फायदा? उसे ज्यादा पढ़ाकर भी दहेज देना ही है, यहाँ तक कि स्त्री भोजन भी पुरुष के उपरांत करती है।

उचित शिक्षा का अभाव भी लिंग असमानता को बढ़ावा देता है। नौकरियों में लिंग असमानता देखी गई किन्तु निरन्तर प्रयास के बाद आज नौकरियों में भेदभाव कम हो गया है, स्त्री-पुरुष के वेतन में जो असमानता थी उसे भी स्त्री सुधारवादी आंदोलनों के प्रयासों ने खत्म कर दिया है, फिर भी अनस्किल्ड नौकरियों में आज भी यह भेदभाव कायम है, ऐसे नौकरियों में आज भी स्त्रियों को पुरुषों से कम तनख्वाह दी जाती है।

Certified as
TRUE COPY

Principal
Ramniranjan Jhunjhunwala College,
Ghatkopar (W), Mumbai-400086.

संघर्ष की यह कहानी यहीं समाप्त नहीं होती। विवाह के उपरांत 'नववधु' को घर के किसी फैसले में न तो उसकी सलाह ली जाती है और न ही फैसले लेने का अधिकार, पिता और पति दोनों ने ही उसे अधिकार विहीन बना दिया। आज भी, पिता की संपत्ति पर पुत्री का अधिकार नहीं है यदि, वह मांग करे तो रिश्तों में दरार आना शुरू हो जाता है। कानूनन संपत्ति का अधिकार मायके और ससुराल में मिलने पर भी, स्त्रियों को दोनों ही जगह उसके हक का एक ढेला तक नहीं दिया जाता है। ऐसी अनेक समस्याएँ लिंग समानता के प्रश्न को मजबूती से उठाती हैं।

स्त्री-पुरुष के अलावा समाज में एक और लिंग है जिसे हाल ही में तृतीय लिंग (थर्ड जेंडर) के नाम से समाज में पहचान मिली है। समाज में सर्वाधिक तिरस्कृत लिंग यही है, जिसे सदैव उपेक्षित समझा गया। अंग्रेजों के समय में तो इस लिंग को अपराध के अंतर्गत रखा गया। एक आम नागरिक को राज्य से जो अधिकार मिलते हैं, उन सारे अधिकारों से वंचित किया गया। इन्हें अपवित्र, अशुभ तक माना जाता था जिसकी वजह से इस लिंग समुदाय के साथ आदि से अव तक अन्याय हो रहा है।

नवमार्क्सवाद, समाज के हरेक वर्ग के भी उपवर्ग के उसके अपने परिवेश में जाकर उसकी समस्या का विश्लेषण करने की बात करता है, और यहीं से शुरु होती है- 'पॉलिटिक्स ऑफ आइडेंटिटी' थर्ड जेंडर ने एक लम्वी लड़ाई लड़कर इस आइडेंटिटी को प्राप्त कर लिया है। सन २०१६ में सरकार ने इस 'आइडेंटिटी' को 'तृतीय लिंग' के रूप में पहचान तो दे दी किन्तु अभी भी इस लिंग को अपने अधिकारों व समाज में सम्मान पाने के लिए अपनी लड़ाई लड़नी है। मनुष्य होने के नाते हमें उनके इस रूप को स्वीकारना होगा, तभी हम समानता की बात कर सकते हैं।

प्रकृति परिवर्तनशील है, इसी परिवर्तनशीलता के कारण समाज में अनेकों बदलाव होते रहते हैं। भारतीय समाज में लिंग असमानता के अनेकों कारण हैं जिसके फलस्वरूप स्त्री को उपेक्षित जीवन जीना पड़ा। जव स्त्रियों ने अपने ऊपर हो रहे अत्याचारों के खिलाफ आवाज उठाई तो कई सामाजिक व धार्मिक संगठनों ने इसका विरोध किया। पुनर्जागरणकाल में (सन् १९१९ में) विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं ने लिंग असमानता के विरुद्ध विगुल वजाया तो संसार के सभी लोगों की समानता पर विचार किया गया और उन लोगों पर कठोर प्रहार किया गया जो 'स्त्री उत्थान' का विरोध कर रहे थे। तदोपरान्त स्त्री के अधिकारों के पक्ष में वातावरण तैयार होने लगा। १९ वीं शताव्दी में शिक्षा और विज्ञान की उन्नति के फलस्वरूप पुनः सामाजिक व धार्मिक रीति रिवाजों पर विचार किया जाने लगा। फलतः ब्रह्म समाज, आर्य समाज,

Certified as
TRUE COPY

Principal
Ramniranjan Jhunjhunwala College,
Ghatkopar (W), Mumbai-400086.

थियोसोफीकल सोसाइटी आदि समाज सुधारक आन्दोलन हुए जिनका मुख्य उद्देश्य हिन्दू धर्म में सुधार करना था। परिणाम स्वरूप समाज में धीरे-धीरे सुधारवादी दृष्टि उभरकर आ रही है। प्रक्रिया धीमी है पर विश्वास अटल है कि आनेवाले समय में समाज स्त्री व थर्ड जेंडर के प्रति भी उदारतापूर्ण रवैया अपनायेगा ताकि समाज में सभी लिंग बिना किसी तनाव के अपना सुखमय जीवन जी सकें।

२१ वीं सदी में सरकार की ओर से महिलाओं के खिलाफ हिंसा समाप्त करने की पहल जारी है। तस्करी, घरेलू हिंसा और यौन शोषण को रोकने के लिए विशेष प्रावधान भी बनाए गए हैं। नीतिगत कार्यक्रमों में लैंगिकता को प्रस्तावित और एकीकृत करने हेतु सरकार प्रयासरत है। जनवरी २०१५ में बालिकाओं का संरक्षण, भ्रूण हत्या समाप्त करने व स्त्री सशक्तिकरण करनेवाले अभियान 'बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ' जारी किए गए हैं। राष्ट्रीय स्तर पर महिलाओं की दक्षता और रोजगार से जुड़े कार्यक्रमों को देश के कोने-कोने में भेजा जा रहा है। यौन शोषण, घरेलू हिंसा और असमान पारिश्रमिक से संबंधित कानूनों को भी आज मजबूती दी जा रही है।

अतः प्रयास गतिशील है। हम सभी को मिलकर सहयोग देना होगा। भविष्य खुशहाल ही होगा।

संदर्भ ग्रंथ

1) कल्याण, हिन्दू कौन, कल्याण हिन्दू संस्कृति अंक

2) तुलसीकृत रामायण - बालकाण्ड

वेबसाइट

- हिन्दीकीदुनिया.कॉम

Certified as
TRUE COPY

Principal
Ramniranjan Jhunjhunwala College,
Ghatkopar (W), Mumbai-400086.